

## Unit 06. नवजात शिशु का प्रबंधन

### (Management of Newborn)

Q. एक नवजात शिशु के जन्म के तुरन्त बाद आप शिशु की देखभाल व ऑकलन कैसे करेंगे?

**How will you assess and care of a new born immediately after birth?**

उत्तर- नवजात शिशु का ऑकलन (Assessment of the Newborn)

जन्म के समय जब शिशु की umbilical cord को काटकर माँ से पृथक कर दिया जाता है तो उसे स्वयं का श्वसन व परिसंचरण स्थापित करना पड़ता है।

इसके लिए शिशु को बाह्य-गर्भाशय (extra-uterine) जीवन से समायोजन व अनुकूलन करने पड़ते हैं।

इस तरह के अनुकूलन के प्रति शिशु के समायोजन (adjustment) के मूल्यांकन एवं सहायता पर ही इस संक्रमण काल (transitional period) की सफलता निर्भर करती है, इसके निम्न चरण हैं-

1. अपगार स्कोर निकालना
2. हृदय श्वसनीय कार्यों में सहायता
3. ताप-नियंत्रण
4. अन्य देखभाल

#### 1. अपगार स्केल (Apgar Scaling)

जन्म के समय अपगार स्केल विधि से शिशु की दशा (condition of infant) का

त्वरित ऑकलन किया जाता है।

यह जन्म के तुरन्त एक मिनट बाद व जन्म के पाँच मिनट बाद किया जाना चाहिए।

इस स्कोरिंग में शिशु के पाँच जीवन चिह्नों हृदय धड़कन दर, श्वसन दर, पेशीय तन्यता, उत्तेजनशीलता व शिशु के रंग का मूल्यांकन कर उन्हें 0, 1 व 2 अंक प्रदान किए जाते हैं।

इनके योग से जन्म पर शिशु की दशा व तत्सम्बन्धी आवश्यक देखभाल की जानकारी मिलती है।

8-10 स्कोर का अर्थ है कि नवजात की दशा श्रेष्ठ है और वह बाह्य गर्भाशयी जीवन से आसानी से समायोजन कर रहा है।

स्कोर 5-7 इंगित करता है कि नवजात को स्वतन्त्र जीवन में मध्यम दर्जे की परेशानी (moderate-difficulty) है, दशा ठीक-ठाक है परन्तु शिशु को ऑक्सीजन सहायता (ambu-bag) की आवश्यकता है।

जबकि 5 से कम स्कोर का अर्थ है कि शिशु को तुरन्त विशिष्ट देखभाल की आवश्यकता है जैसे- एण्डोट्रेकियल-ट्यूब इन्ट्यूबेशन इत्यादि।

## 2. हृदय-श्वसनीय कार्यों में सहायता (Support of Cardiorespiratory Function)

- स्थिति (Positioning) शिशु को पीठ के बल लिटाकर गर्दन को थोड़ा या (30°) extend करते हैं। इसके लिए 3/4-1 इंच मोटा कॉटन रोल उसके कंधों के नीचे रख सकते हैं।
- वायु मार्ग की सफाई (Cleaning airway) उपर्युक्त स्थिति (position) देकर तुरन्त बल्व सीरिंज या सक्शन मशीन से मुँह, नाक व pharynx का सक्शन करें।

यह श्वसन स्थापना के लिए पर्याप्त है सामान्यतः इसके बाद शिशु रोने लगता है। शिशु का रोना उसमें श्वसन स्थापना का सूचक है।

- स्पर्श-उद्दीपन (Tactile stimulation) शिशु के पैर के तलवों पर एक दो थपकी

मारने एवं पीठ को रगड़ने से बच्चों का श्वसन शुरू हो जाता है।

- यदि इसके उपरांत भी बच्चों में श्वसन शुरू नहीं होता है (नहीं रोता है) तो अधिक सक्शन या उद्दीपन में समय व्यय नहीं करके अन्य पुर्नजीवन-तकनीक (resuscitation measures) अपनाने चाहिए।

इस स्थिति में इन्हें बैग व मास्क से या एण्डोट्रेकियल ट्यूब डालकर वेन्टीलेशन की आवश्यकता हो सकती है।

अम्बु बैग की अनुपलब्धता में मुख श्वसन की तकनीक अपनाई जा सकती है।

### 3. ताप नियंत्रण (Temperature Maintenance)

नवजात शिशु का शारीरिक तापमान वातावरणीय ठण्डक वाष्पोत्सर्जन एवं गीले व नग्न शरीर से ऊष्मा-क्षय के कारण गिर सकता है।

इस हेतु शिशु को शुष्क व स्वच्छ तौलिये से कोमलता से पोंछकर गर्म कम्बल में बँककर या ऊष्मा विकिरण-युक्ति (radiant heat device) में रखते हैं।

माता के शरीर से विपकाकर सुलाने से भी तापमान नियंत्रित रहता है।

यदि शिशु को पुनर्जीवन (resuscitation) की जरूरत हो तो भी गर्म वातावरण होना चाहिए।

### 4. अन्य देखभाल (Other Care) -

- निरीक्षण (Observation) बच्चे का अपगार स्कोरिंग करें व जन्मजात विकृतियों (congenital anomalies) को पहचानें।

- पहचान चिह्न (Identification) शिशु को पहचान टैग बाँधें जिसमें माता का नाम लिखा हो। शिशु के पद चिह्न, हथेली चिह्न, फोटोग्राफ पहचान के लिए प्रिन्ट करते हैं।

- डॉक्यूमेंटेशन (Documentation) शिशु का रजिस्ट्रेशन नं., लिंग, डिलीवरी का दिन,

समय, वजन, लम्बाई, सिर की परिधि इत्यादि को नोट करें।

- आँखों की देखभाल (Care of eyes)

विसंक्रमित पट्टी (swab / bandage) को नार्मल सैलाइन में भिगोकर आँखों को साफ करते हैं।

- नाभि-रज्जु की देखभाल (Care of umbilical cord)

कॉर्ड में स्पंदन (pulsation) तक रुके इससे प्लेसेन्टा से अतिरिक्त रक्त शिशु में प्रवाहित होगा फिर कॉर्ड पर दो क्लेम्प लगाकर उनके बीच से. (शिशु के उदर से लगभग 1 इंच दूरी पर) काट देते हैं।

शिशु की तरफ के कार्ड को बाँध दें या कॉर्ड क्लेम्प लगायें।

ठूठ (स्टम्प) को बिना किसी पट्टी (dressing) के छोड़ दें तथा किसी प्रकार की रक्तस्राव (bleeding) या संक्रमण के लिए इसका गिरने तक निरीक्षण करते हैं।

- त्वचा की देखभाल (Care of Skin)

स्वच्छ व मुलायम कपड़े से कोमलता से नवजात पर चिपका हुआ गर्भाशय रक्त, म्यूकस व स्राव हटाकर शिशु को स्वच्छ कपड़े में लपेट दें।

शरीर पर स्थित सफेद मोम जैसी परत को जोर से हटाने की कोशिश नहीं करनी चाहिए। इस समय बच्चों को नहलाना ठीक नहीं है।

इससे बच्चे निम्न ताप (hypothermia) का शिकार हो सकते हैं।

Answer: Assessment of the Newborn:

When the baby's umbilical cord is cut and separated from the

mother at the time of birth, he has to establish his own respiration and circulation.

For this, the baby has to adjust and adapt to extra-uterine life.

The success of this transitional period depends on the assessment and support of the child's adjustment towards such adaptation, its stages are as follows-

1. Calculating Apgar Score
2. Aids in cardio-respiratory functions
3. Temperature-control
4. Other care

#### 1. Apgar Scaling:

The condition of the infant is quickly assessed at the time of birth using the Apgar scale method.

This should be done immediately one minute after birth and five minutes after birth.

In this scoring, 0, 1 and 2 marks are given by evaluating the five vital signs of the baby, heart beat rate, respiratory rate, muscle tension, excitability and color of the baby.

By combining these, we get information about the condition of the baby at birth and the necessary care related to it.

A score of 8-10 means that the newborn is in good condition and is adjusting easily to life outside the uterus.

A score of 5-7 indicates that the newborn has moderate-difficulty in living independently, is doing well but requires oxygen support (ambu-bag).

Whereas a score less than 5 means that the baby needs immediate specialized care such as endotracheal-tube intubation etc.

## 2. Support of Cardiorespiratory Function

- Positioning: Lay the baby on the back and extend the neck slightly (30°). For this 3/4-1 inch thick cotton roll can be placed under his shoulders.
- Cleaning the airway by giving the above position and immediately using bulb syringe or suction.
- Suction the mouth, nose and pharynx with the machine. This is enough to establish breathing and usually the baby starts crying after this. Crying of the baby is an indicator of establishment of respiration in it.
- Tactile stimulation:  
By tapping a few times on the soles of the baby's feet and

rubbing the back, the baby's breathing starts.

- If even after this the child does not start breathing (does not cry), then other resuscitation measures should be adopted instead of spending more time in suction or stimulation.

In this situation, they may require ventilation with a bag and mask or by inserting an endotracheal tube.

In non-availability of Ambu bag, the technique of mouth respiration can be adopted.

### 3. Temperature Maintenance:

The body temperature of a newborn baby can fall due to environmental cold, transpiration and heat loss from the wet and naked body.

For this, the baby is gently wiped with a dry and clean towel, wrapped in a warm blanket or kept in a radiant heat device.

The temperature is also controlled by rubbing the mother's body and making her sleep.

There should also be a warm environment if the baby needs resuscitation.

### 4. Other Care -

- Observation: Do Apgar scoring of the child and check for

congenital anomalies. Recognize.

- Identification:

Tie an identification tag to the baby on which the mother's name is written. Baby's footprints, palm prints and photographs are printed for identification.

- Documentation:

Note down the baby's registration number, gender, date of delivery, time, weight, length, head circumference etc.

- Care of eyes:

Clean the eyes by soaking a sterile swab/bandage in normal saline.

- Care of umbilical cord:

Wait till the pulsation in the cord stops, this will allow extra blood to flow from the placenta to the baby, then put two clamps on the cord and pass through them.

(at a distance of about 1 inch from the baby's abdomen).

Tie the cord on the baby's side or use a cord clamp.

Leave the stump without any dressing and observe it for any bleeding or infection until it falls off.



- Care of Skin:

Using a clean and soft cloth, gently remove the uterine blood, mucus and discharge stuck to the newborn and wrap the baby in a clean cloth.

One should not try to remove the white wax-like layer present on the body with force.

It is not right to bathe children at this time. Due to this, children can become victims of hypothermia.

**Q. स्तनपान क्या है? स्तनपान के लाभों का वर्णन कीजिए।**

**What is breast feeding? Explain the advantages of breast feeding.**

**उत्तर - स्तनपान (Breast Feeding)**

स्तनपान एक प्राकृतिक प्रक्रिया है। माँ का दूध बच्चे के लिए आदर्श व परिपूर्ण (perfect) स्थिति में होता है चाहे माँ बीमार, गर्भवती, menstruating अथवा कुपोषित ही क्यों न हो।

इसके अनगिनत लाभों में कुछ प्रमुख लाभ इस प्रकार हैं-

1. माँ के दूध में वे सभी पोषक तत्व (nutrients) होते हैं जो एक बच्चे को 6 माह की उम्र तक आवश्यक होते हैं ये सभी पोषक तत्व शीघ्र व आसानी से पच जाते हैं।
2. माँ के दूध में प्रोटीन व वसा सही मात्रा में व सर्वोपयुक्त रूप में होता है।
3. लैक्टोज शर्करा अन्य प्रकार के दूधों से बच्चे की आवश्यकतानुसार अधिक पाई जाती है, जो अतिरिक्त विटामिन संश्लेषण में काम आती है।
4. इसमें पर्याप्त विटामिन्स होते हैं।

5. इसमें पर्याप्त मात्रा में जल पाया जाता है यहाँ तक कि तेज गर्मी व शुष्क मौसम में भी प्रथम 6 माह में बच्चे को ऊपर से पानी देने की आवश्यकता नहीं है।

6. इसमें पर्याप्त मात्रा में आयरन अर्थात् लौह-तत्व पाया जाता है फलतः स्तनपायी बच्चों में लौह-न्यूनता-जन्य एनीमिया (iron-deficiency-anemia) नहीं पाया जाता है।

7. माँ के दूध में विशिष्ट पाचक एन्जाइम पाए जाते हैं।

8. स्तनपान से माँ व बच्चे में घनिष्ठ शारीरिक व भावनात्मक सम्बन्ध स्थापित होता है जो माँ में संतुष्टि एवं बच्चे की स्वस्थ वृद्धि एवं विकास के लिए आवश्यक है।

9. माँ का दूध शिशु को उचित तापमान पर ताजा, स्वच्छ व जीवाणु रहित अवस्था में मिलता है चूँकि यह सीधे शिशु के मुख में जाता है अतः ये बच्चे बीमार कम होते हैं।

10. माँ का दूध तैयार करने के लिए श्रम, ईंधन और समय की आवश्यकता नहीं होती है।

11. माँ के दूध में संक्रमण रोधी कारक (anti-infective factors) पाए जाते हैं जो बच्चे की संक्रमणों से रक्षा करते हैं तथा इसमें श्वेत-रक्ताणु, एण्टीबॉडीज (immunoglobulins), मैक्रोफेज (macrophages), लाइसोजाइम इत्यादि पाए जाते हैं। ये प्रथम दूध यानि कोलोस्ट्रम में अधिक मात्रा में पाए जाते हैं।

12. माँ के दूध में एक विशिष्ट पदार्थ 'Bifidus-factor' पाया जाता है, जो बच्चे की आँतों में लेक्टोबेसीलस बाईफिडस (lactobacillus bifidus) बैक्टीरिया की वृद्धि को प्रेरित करता है।

यह जीवाणु लेक्टिक एसिड (lactic acid) उत्पादन कर आँतों में अन्य अतिसार जन्य जीवाणुओं जैसे- E. Coli की वृद्धि होने से रोकता है तथा शर्करा-पाचन में मदद करता है।

13. इसमें लैक्टोफैरिन (lactoferrin) पाए जाते हैं जो आयरन को बांधकर हानिकारक जीवाणुओं की वृद्धि को रोक देते हैं।

14. स्तनपायी बच्चे उपर्युक्त प्रतिरक्षक कारकों के कारण दस्त, श्वसन संक्रमण व

मध्यकर्णशोथ (otitis media) से bottle-feeding बच्चों की तुलना में कम शिकार होते हैं तथा संक्रमण का शिकार होने पर ये शीघ्र पुनः स्वस्थ होते हैं।

15. स्तनपान से प्रसवोपरांत होने वाला रक्तस्राव (bleeding) जल्दी रुकता है जिससे माता में गर्भाशय प्रत्यावर्तन (uterine - involution) शीघ्र होता है व माता को सामान्य सौन्दर्य पुनः प्राप्त होता है।

16. स्तनपायी महिलाओं में स्तन व अण्डाशय कैंसर की कम संभावना रहती है।

17. यह 'प्राकृतिक गर्भनिरोधक उपाय' (Lactational Ammenorrhoea or LAM) के रूप में गर्भधारण को रोकता है।

Answer - Breast Feeding Breast feeding is a natural process. Mother's milk is in ideal and perfect condition for the child, even if the mother is sick, pregnant, menstruating or malnourished.

Among its countless benefits, some of the major benefits are as follows-

1. Mother's milk contains all the nutrients that a child needs till the age of 6 months. All these nutrients are quickly and easily digested.

2. Mother's milk contains protein and fat in the right quantity and in the most suitable form.

3. Lactose sugar is found in more quantity than other types of milk as required by the child, which is used in additional vitamin synthesis.

4. It contains enough vitamins.

5. Sufficient amount of water is found in it, even in hot summer and dry weather, there is no need to give water to the child in the first 6 months.
6. Adequate amount of iron is found in it, as a result iron-deficiency anemia is not found in mammalian children.
7. Special digestive enzymes are found in mother's milk.
8. Breastfeeding establishes a close physical and emotional bond between mother and child, which is essential for mother's satisfaction and the child's healthy growth and development.
9. Mother's milk is given to the child in a fresh, clean and germ-free state at appropriate temperature. Since it goes directly into the child's mouth, these children are less likely to fall sick.
10. Preparing mother's milk does not require labour, fuel and time.
11. Anti-infectious factors are found in mother's milk which protect the child from infections and white blood cells, antibodies (immunoglobulins), macrophages, lysozyme etc. are found in it. These are found in large quantities in the first milk i.e. colostrum.
12. A special substance 'Bifidus-factor' is found in mother's milk, which stimulates the growth of *Lactobacillus bifidus* bacteria in the intestines of the child. By producing lactic acid, this bacteria prevents the growth of other diarrhea causing bacteria like *E. Coli* in the intestines and helps in sugar digestion.
13. Lactoferrin is found in it which binds iron and stops the growth of harmful bacteria.

14. Due to the above mentioned immune factors, breastfed children are less prone to diarrhoea, respiratory infections and otitis media as compared to bottle-fed children and they recover quickly after contracting the infection.

15. Breastfeeding stops postpartum bleeding quickly, due to which uterine involution in the mother occurs quickly and the mother regains her normal beauty.

16. Breast and ovarian cancer are less likely to occur in breastfed women.

17. It prevents pregnancy as a 'natural contraceptive measure' (Lactational Amenorrhoea or LAM).

**Q. स्तनपान की कठिनाइयाँ एवं स्तनपान को प्रभावित करने वाले कारकों को स्पष्ट कीजिए।**

**Explain the difficulties of breast feeding and also explain the factors which affected breast feeding.**

**उत्तर-** स्तनपान में कठिनाइयाँ व बाधाएँ (Difficulties in Breast Feeding)

स्तनपान के शुरूआती दिनों में कई प्रकार की कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है खासकर प्रथम बार स्तनपान कराने वाली माताओं में।

कुछ मुख्य कठिनाइयाँ निम्न प्रकार हैं जिन्हें नर्स की व्यावसायिक सलाह से अधिकांश को हल किया जा सकता है-

**1. प्रारम्भिक स्तन समस्या (Early Breast Engorgement)**

प्रसव के कुछ समय बाद स्तन भरा हुआ महसूस होता है तथा स्तन कठोर हो जाते हैं व दर्द करने लगते हैं।

ऐसी स्थिति में स्तन से अतिरिक्त दूध को निकाल देना चाहिए बाद में जब बच्चा आराम से चूषण करने लगता है, तो यह समस्या समाप्त हो जाती है।

## 2. सपाट चूचुक (Flat Nipple) -

- स्तनपान ठीक प्रकार से करने के लिए चूचुक को सीधा रखना चाहिए।
- बच्चे को सावधानी से स्तन (breast) पर लगा लेना चाहिए।
- यदि बच्चा दूध चूसने में असमर्थ हो तो nipple shield का प्रयोग करके दूध निकाल देना चाहिए।
- स्तन को मुलायम रखने के लिए दूध को निकाल देना चाहिए।

3. दर्दयुक्त चूचुक (Sore nipple) - बच्चे द्वारा सही स्थिति में स्तनपान नहीं करने से चूचुक छिल जाते हैं जिससे उनमें तीव्र दर्द होता है यह निम्न कारणों से होता है-

- दोषपूर्ण चूषण तकनीक (Faulty sucking technique)
- चपटा चूचुक (Flat nipple)
- भरे हुए स्तन (Engorged breast)
- दोषपूर्ण अवस्था में चूषण (Sucking in a bad position)
- चूचुक की फटन (Fissure of the nipple)

## 4. मनोवैज्ञानिक कारक (Psychological factors)

स्तनपान कराने में कुछ मनोवैज्ञानिक कारण भी होते हैं-

- तीव्र दर्द होना (Strong pain)
- गुस्सा होना (Anger)
- अचानक सदमा आना (Sudden shock)
- निरंतर घबराहट और चिंता (Anxiety and worry)

5. अन्य समस्याएँ (Other problems) -

- दूध की मात्रा अधिक व तीव्रता से बनना।
- शिशु को चूसने में मुश्किल होना आदि।

स्तनपान में कठिनाई को रोकने के उपाय (Solution of breast feeding problems)

1. प्रसवपूर्व देखभाल (antenatal care) द्वारा
2. सही स्थिति (proper position) में बच्चे को रखकर स्तनपान कराना।
3. थोड़ी-थोड़ी देर के लिए बार-बार बच्चे को स्तनपान कराना।
4. स्तनपान से पूर्व माँ को गुस्से में नहीं होना चाहिए। कुछ मिनट के आराम के बाद breast feed देना शुरू करना चाहिए।
5. स्तनपान के दौरान माँ को किसी भी प्रकार से परेशान नहीं रहना चाहिए।
6. माँ को यह ध्यान देना चाहिए कि बच्चा दूध चूस रहा है या नहीं।
7. चूषण उद्दीपन (sucking stimulus) को बढ़ाने के लिए बच्चे को बार-बार चूषण करने के लिए प्रोत्साहित करें।

स्तनपान को प्रभावित करने वाले कारक (Factors influencing feeding)

स्तनपान को प्रभावित करने वाले कारक निम्नलिखित हैं-

1. बार-बार स्तनपान कराने से production and ejection reflexes अत्यधिक उद्दीप्त हो जाते हैं।
2. समाज में यह अंधविश्वास विद्यमान है कि colostrum अच्छा नहीं है इससे प्रथम स्तनपान में देर हो जाती है।
3. माँ की मानसिकता milk producing reflexes के ऊपर प्रभाव डालती है।
4. बच्चे और माँ के बीच आपसी प्रेम व प्यार (love and affection) माँ में मनोवैज्ञानिक परिवर्तन ला सकते हैं।
5. फीडिंग हैबिट (feeding habit) और तकनीक भी breast feeding पर प्रभाव डालती हैं जैसे स्थितियाँ, आराम आदि।
6. बच्चे के ठीक से चूषण (suck) करने में असमर्थ होने पर अपर्याप्त उद्दीपन (inadequate stimulation) होता है और स्तनपान के ऊपर प्रभाव पड़ता है।

Answer- Difficulties and obstacles in breastfeeding (Difficulties in Breast Feeding)

Many types of difficulties may have to be faced in the initial days of breastfeeding, especially in mothers who are breastfeeding for the first time.

Some of the main difficulties are as follows, most of which can be solved with professional advice from the nurse-

1. Early Breast Engorgement: Some time after delivery, the



breasts feel full and the breasts become hard and start hurting.

In such a situation, excess milk should be removed from the breast later when the baby If you start suctioning comfortably, this problem goes away.

## 2. Flat Nipple -

- To breastfeed properly, the nipple should be kept straight.
- The child should be applied to the breast carefully.
- If the child is unable to suck milk, then the milk should be expressed using a nipple shield.
- To keep the breast soft, milk should be expressed.

3. Sore nipples - Due to the child not breastfeeding in the right position, the nipples get peeled due to which there is intense pain in them. This happens due to the following reasons -

- Faulty sucking technique
- Flat nipple
- Engorged breast
- Sucking in a bad position
- Fissure of the nipple

4. Psychological factors: There are some psychological reasons for breastfeeding-

- Strong pain
- Getting angry (Anger)
- Sudden shock
- Constant anxiety and worry

5. Other problems -

- Production of milk in large quantity and intensity.
- Difficulty in sucking the baby etc.

Solutions to prevent difficulty in breastfeeding (Solution of breast feeding problems)

1. Through antenatal care
2. Breastfeeding by keeping the baby in the proper position.
3. Breastfeeding the baby frequently for short periods of time.
4. Mother should not be angry before breastfeeding. Breast feeding should be started after a few minutes of rest.
5. The mother should not be disturbed in any way during breastfeeding.
6. The mother should pay attention to whether the baby is sucking

milk or not.

7. Encourage the baby to suck repeatedly to increase the sucking stimulus.

Factors influencing breastfeeding:

Following are the factors influencing breastfeeding-

1. Due to frequent breastfeeding, production and ejection reflexes become highly stimulated.
2. There is a superstition in the society that colostrum is not good, it delays the first breastfeeding.
3. Mother's mentality affects milk producing reflexes.
4. Mutual love and affection between child and mother can bring psychological changes in the mother.
5. Feeding habit and technique also affect breast feeding like conditions, rest etc.
6. Inadequate stimulation occurs when the baby is unable to suck properly and affects breastfeeding.

**Q. अपगार स्केलिंग क्या है? अपगार स्कोर चार्ट बनाइए।**

**What is APGAR scaling? Make APGAR score chart.**

**उत्तर-** अपगार स्केल (APGAR Scaling)

जन्म के समय अपगार स्केल विधि से शिशु की दशा (condition of infant) का

त्वरित ऑकलन किया जाता है।

यह जन्म के तुरन्त एक मिनट बाद व जन्म के पाँच मिनट बाद किया जाना चाहिए।

इस स्कोरिंग में शिशु के पाँच जीवन चिह्नों हृदय धड़कन दर, श्वसन दर, पेशीय तन्यता, उत्तेजनशीलता व शिशु के रंग का मूल्यांकन कर उन्हें 0.1 व 2 अंक प्रदान किए जाते हैं।

इनके योग से जन्म पर शिशु की दशा व तत्सम्बन्धी आवश्यक देखभाल की जानकारी मिलती है।

8-10 स्कोर का अर्थ है कि नवजात की दशा श्रेष्ठ है और वह बाह्य गर्भाशयी जीवन से आसानी से समायोजन कर रहा है।

स्कोर 5-7 इंगित करता है कि नवजात को स्वतन्त्र जीवन में मध्यम दर्जे की परेशानी (moderate-difficulty) है, दशा ठीक-ठाक है परन्तु शिशु को ऑक्सीजन सहायता (ambu-bag) की आवश्यकता है।

जबकि 5 से कम स्कोर का अर्थ है कि शिशु को तुरन्त विशिष्ट देखभाल की आवश्यकता है जैसे- एण्डोट्रेकियल-ट्यूब इन्ट्यूबेशन इत्याद

Answer: Apgar Scaling:

The condition of the infant is quickly assessed at the time of birth using the Apgar scale method.

This should be done immediately one minute after birth and five minutes after birth.

In this scoring, 0.1 and 2 marks are given by evaluating the five vital signs of the baby, heart beat rate, respiratory rate, muscle tension, excitability and color of the baby.

By combining these, we get information about the condition of the baby at birth and the necessary care related to it.

A score of 8-10 means that the newborn is in good condition and is adjusting easily to life outside the uterus.

A score of 5-7 indicates that the newborn has moderate-difficulty in living independently, is doing well but requires oxygen support (ambu-bag).

Whereas a score less than 5 means that the baby needs immediate specialized care such as endotracheal-tube intubation etc.

संकेत (Indicator)	0 अंक	1 अंक	2 अंक
<b>A</b> Activity Muscle Tone (पेशीय तान)	अनुपस्थिति (Absent)	हाथ-पैरों में कुछ आकुंचन (Flexed arms and legs)	सक्रिय (Active)
<b>P</b> Pulse (पल्स)	अनुपस्थिति (Absent)	100 से कम प्रति मिनट (Less than 100 p/m)	100 से अधिक प्रति मिनट (More than 100 p/m)
<b>G</b> Grimace Reflex Irritability (उत्तेजनशीलता)	कोई प्रतिक्रिया नहीं (No response)	हल्की प्रतिक्रिया (Minimal response)	पूर्ण प्रतिक्रिया (Prompt response)
<b>A</b> Appearance Skin Color (त्वचा रंग)	नीला/पीला (Blue; pale)	धड़ गुलाबी, हाथ-पैर नीले Pink body; blue extremities	गुलाबी शरीर Pink body
<b>R</b> Respiration (श्वसन)	अनुपस्थिति (Absent)	धीमा एवं क्रमहीन (Slow and irregular)	जोर से रोना (Vigorous cry)

Q. जन्म के पश्चात शिशु में कौन-कौन से शारीरिक परिवर्तन होते हैं?

What are the various body changes in baby occurring after birth?

उत्तर- शिशु जन्म होने के बाद प्रारम्भिक 4 सप्ताह (28 दिन) उसके नवजात अवधि (neonatal period) के रहते हैं।

इस अवधि में शिशु का वजन  $2\frac{1}{2}$ -3 kg तथा लम्बाई 16"-18" रहती है।

शिशु को गर्भ से सब कुछ भिन्न मिलता है, यद्यपि वह प्राकृतिक प्रक्रिया के द्वारा कई प्रकार के शरीर क्रियात्मक (physiological) तथा वातावरणीय (environmental) परिवर्तनों को सहन करता है, जिनमें मुख्यतः physiological changes निम्न प्रकार से हैं-

### 1. श्वसन क्रिया का आरम्भ होना (Initiation of Breathing System)

गर्भ में शिशु के सभी आवश्यक कार्य अपरा (placenta) के द्वारा किए जाते थे परन्तु जन्म लेने के बाद ही शिशु के सभी तंत्र प्राकृतिक रूप से कार्य करने लगते हैं।

सबसे पहले स्वस्थ शिशु बाहर आते ही रोता है परन्तु श्वॉस लेने से पहले midwife को शिशु का मुख व नासाछिद्रों के श्लेष्मा को साफ करना होता है।

श्वसन क्रिया को प्रारम्भ करने में जैव रासायनिक एवं शारीरिक उद्दीपकों की प्रमुख भूमिका होती है। इसी क्रिया के द्वारा gaseous exchange होता है।

प्रसव प्रक्रिया के समय शिशु का वक्ष compress होता है जिससे फेफड़ों का द्रव निकल जाता है, इस कारण से फेफड़े की alveoli में दबाव कम होने से शिशु के रोने के साथ वायुमंडलीय गैस का प्रवेश हो जाता है।

### 2. रक्त परिवहन तंत्र में परिवर्तन (Change in Circulatory System) -

जन्म के बाद शिशु में श्वसन क्रिया चालू हो जाने तथा umbilical cord के clamp हो जाने के साथ ही circulatory system में परिवर्तन होने लग जाता है।

Umbilical cord की clamping हो जाने के बाद से ही systemic vascular

प्रतिरोध बढ़ जाने से मूल रक्तवाहिकाओं के अतिरिक्त वाहिकाएं बंद हो जाती हैं जैसे ductus venosus का बंद होना, ductus arteriosus का बंद होना, foramen ovale का बंद होना, aortic blood pressure का बढ़ जाना आदि परिवर्तन हो जाते हैं।

### 3. पाचन तंत्र में परिवर्तन (Changes in Digestive System)

जन्म लेने से पूर्व गर्भ में शिशु के सभी कार्य अपरा (placenta) द्वारा होते हैं।

जन्म लेने के बाद दुग्ध चूसना, निगलना इसको अवशोषित करना तथा मल त्यागना शिशु को ही करना होता है।

शिशु में ये सभी कार्य प्राकृतिक रूप से जन्म से ही आते हैं।

शिशु का पहला मल meconium कहलाता है जो चिपचिपा काले-हरे रंग का होता है।

तीन-चार दिनों तक शिशु माँ के स्तनों से स्रवित गाढ़-पीला दूध colostrum को ही पीता है जो पोषक व विरेचक रहता है।

### 4. ताप नियन्त्रण (Thermal Regulation)

गर्भ में शिशु को उसके अनुसार उचित तापमान उपलब्ध होता है परन्तु जन्म के पश्चात वातावरण का तापमान कम होता है, अतः शिशु को तुरन्त सुखाकर warm cloth में लपेट देते हैं।

ताप नियंत्रण के लिए ही शिशु को माँ के अंग से सटाकर व स्तनों के निकट रखा जाता है।

शिशु में वयस्क की अपेक्षा rate of metabolism दोगुना रहता है, इस कारण शिशु में ताप हानि अधिक होती है।

## 5. संक्रमण की रोकथाम (Prevention of Infection)

शिशु को रोग प्रतिरोधक क्षमता (passive immunity) मां से आनुवांशिक रूप में प्राप्त होती है, परन्तु प्रतिरक्षा तंत्र (immunological system) अविकसित रहता है।

नवजात शिशुओं में त्वचा तथा श्लेष्मिक झिल्ली के द्वारा रोग के जीवाणुओं को रोका जाता है।

## 6. त्वचा (Skin) -

नवजात शिशु की त्वचा की परतें पतली होती हैं, इसलिए यदि त्वचा को हल्की सी रगड़ लगने से ही त्वचा पर लाल चकत्ते अथवा फफोले बन जाते हैं।

जन्म के समय शिशु vernix caseosa से ढँका रहता जो स्नान के बाद हटता है। शिशु को त्वचा के द्वारा ही संक्रमण अधिक होता है।

त्वचा का सूखा रहना आवश्यक होता है।

लगभग 10% शिशुओं में त्वचा से हल्की सी पीलापन की आभा झलकती है जिसको physiological jaundice कहते हैं।

यह neonatal liver के द्वारा अधिक bilirubin के बनने से होता है।

Answer- After the birth of a child, the first 4 weeks (28 days) remain in his neonatal period.

During this period the baby's weight remains 2½-3 kg and length remains 16"-18".

The baby gets everything different from the womb, although through natural process he tolerates many types of physiological



and environmental changes, the main physiological changes of which are as follows -

### 1. Initiation of Breathing System:

In the womb, all the essential functions of the baby were done by the placenta, but only after birth, all the systems of the baby start working naturally.

First of all, a healthy baby cries as soon as it comes out, but before breathing, the midwife has to clean the mucus from the baby's mouth and nostrils. Biochemical and physical stimuli play a major role in initiating respiration.

Through this process gaseous exchange takes place. During the delivery process, the chest of the baby gets compressed due to which the fluid from the lungs gets released, due to this the pressure in the alveoli of the lungs decreases and atmospheric gas enters with the crying of the baby.

### 2. Change in Circulatory System –

Respiration starts in the baby after birth. As soon as this happens and the umbilical cord gets clamped, changes start taking place in the circulatory system.

After the umbilical cord is clamped, due to increase in systemic vascular resistance, vessels other than the original blood vessels get closed such as closure of ductus venosus, closure of ductus arteriosus, closure of foramen ovale, increase in aortic blood pressure. Other changes take place.

### 3. Changes in Digestive System:

Before birth, all the functions of the baby in the womb are performed by the placenta. (placenta).

After birth, it is the baby who has to suck milk, swallow it, absorb it and pass stool.

All these functions come naturally to a child from birth. The baby's first stool is called meconium which is sticky black-green in color.

For three-four days, the baby drinks only colostrum, the thick yellow milk secreted from the mother's breasts, which is nutritious and laxative.

### 4. Thermal Regulation:

The appropriate temperature is available to the baby in the womb, but after birth the temperature of the environment is low, hence the baby is dried immediately and wrapped in a warm cloth.

To control temperature, the baby is kept close to the mother's body and near her breasts.

The rate of metabolism in an infant is double that of an adult, due to which heat loss is more in the infant.

### 5. Prevention of Infection:

The child receives passive immunity from the mother in genetic

form, but the immune system remains undeveloped.

In newborn babies, disease-causing bacteria are prevented by the skin and mucous membranes.

## 6. Skin -

The layers of skin of a newborn baby are thin, hence if the skin is rubbed lightly, red rashes or blisters may form on the skin.

At the time of birth the baby is covered with vernix caseosa which is removed after bathing.

The child mostly gets infected through the skin.

It is necessary for the skin to remain dry.

In about 10% of babies, a slight yellow glow appears on the skin, which is called physiological jaundice.

This occurs due to excessive production of bilirubin by the neonatal liver.

**Q.शिशु मित्र चिकित्सालय नीति समझाइए।**

**Describe Baby Friendly Hospital Initiative (BFHI).**

**उत्तर-** शिशु मित्र चिकित्सालय नीति (Baby Friendly Hospital Initiative)

शिशुओं के जीवित रहने की अवस्था को बढ़ाने हेतु व एकनिष्ठ स्तनपान को प्रोत्साहन देने हेतु यूनिसेफ व विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा सन् 1991 में शिशु मित्र ।

चिकित्सालय नीति को प्रारंभ किया गया। इस नीति का मुख्य उद्देश्य विश्व में स्तनपान

की कम होती जा रही आदत के कारण शिशुओं की होने वाली मृत्यु को रोकना था। इस नीति के अंतर्गत स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं को वैज्ञानिक तथ्यों से अवगत कराकर उनके ज्ञान व कौशल में वृद्धि का समाज में प्रथम 4-6 माह में एकनिष्ठ स्तनपान को बढ़ावा दिया गया।

इस नीति को 152 से अधिक देशों में लागू किया जा चुका है।

इस नीति के अंतर्गत प्रथम 4-6 माह में अन्य पोषण से बचना, रूमिंग-इन वार्ड की आदत को प्रोत्साहन देना, माताओं को स्तनपान के लाभ के बारे में शिक्षित करना, शिशु आहार निर्माताओं को माताओं तथा स्वास्थ्य देखभाल स्टाफ से संपर्क करने से रोकना आदि लक्षित किया गया

Answer- Baby Friendly Hospital Initiative was started in 1991 by UNICEF and World Health Organization to increase the survival rate of babies and to encourage exclusive breastfeeding. Hospital policy was started.

The main objective of this policy was to prevent infant deaths due to the decreasing habit of breastfeeding in the world.

Under this policy, exclusive breastfeeding in the first 4-6 months was promoted in the society to increase the knowledge and skills of health workers by making them aware of scientific facts.

This policy has been implemented in more than 152 countries.

This policy includes avoiding other nutrition in the first 4-6 months, encouraging the practice of rooming-in wards, educating mothers about the benefits of breastfeeding, preventing infant food manufacturers from contacting mothers and health care staff. etc. were targeted.

**Q. स्तनपान की निषिद्ध अवस्थाएं कौन सी हैं?**

**What are the contraindications to breast feeding?**

**उत्तर-** स्तनपान हेतु निषिद्ध अवस्थाएं (Contraindications to Breast Feeding) कुछ ऐसी प्रामाणिक अवस्थाएं हैं जिनमें स्तनपान किया जाना निषिद्ध होता है जिनमें से कुछ प्रमुख अवस्थाएं निम्नलिखित हैं-

1. मां को यदि स्तनव्रण (breast abscess) हो तो स्तनपान स्थगित करना चाहिए व दूध को हाथ से निकालकर फेंक देना चाहिए।
2. मां को यदि सक्रिय तपेदिक (active tuberculosis) हो तो स्तनपान नहीं कराना चाहिए। यदि तपेदिक संक्रामक नहीं है तो उपचार के दो सप्ताह बाद से स्तनपान कराया जा सकता है।
3. यदि मां एन्टीकैंसर दवाईयां ले रही हो जैसे कीमोथैरेपी आदि तो स्तनपान नहीं कराना चाहिए।
4. मां यदि रेडियोएक्टिव आइसोटोप्स औषधि ले रही हो तो जब तक मां के दूध में रेडियोएक्टिव पदार्थ मौजूद हों स्तनपान स्थगित करना चाहिए।
5. नवजात शिशु में मेटाबॉलिक विकार जैसे- Galatosemia व Phenylketonuria
6. ऐसी माताएं जो एल्कोहल का सेवन करती हों तो शिशु को स्तनपान नहीं कराना चाहिए।

स्तनपान की निषिद्ध अवस्थाओं में भी शिशु को स्तनपान कराने से मां एवं शिशु दोनों के स्वास्थ्य व जीवन के लिए हानिकारक होता

**Answer-** Contraindications to Breast Feeding: There are some valid conditions in which breastfeeding is prohibited, some of the major conditions are as follows-

1. If the mother has breast abscess, breastfeeding should be

stopped and the milk should be expressed by hand and thrown away.

2. If the mother has active tuberculosis then she should not breastfeed. If the tuberculosis is not contagious then breastfeeding can be started from two weeks after treatment.

3. If the mother is taking anticancer medicines like chemotherapy etc. then she should not breastfeed.

4. If the mother is taking radioactive isotopes medicine, breastfeeding should be postponed as long as radioactive substances are present in the mother's milk.

5. Metabolic disorders in newborn babies like Galatosemia and Phenylketonuria.

6. Mothers who consume alcohol should not breastfeed their babies.

Breastfeeding the baby even in prohibited situations is harmful for the health and life of both mother and baby

**Q. नवजात में पाए जाने वाले मुख्य लघु विकार कौन-कौन से हैं?**

**What are the main minor ailments in newborn?**

**उत्तर-** नवजात में पाए जाने वाले लघु विकार (Minor Ailments in Newborn)  
नवजात शिशु में पाए जाने वाले प्रमुख लघु विकार निम्न हैं-

1. ऑफ्थेल्मिया नियोनेटोरम (Ophthalmia Neonatorum)

2. नाभिनाल का संक्रमण (Umbilical Infection)

3. मुँह के छाले (Oral Thrush) या मोनोलियेसिस (Monoliasis)
4. टिटनस नियोनेटोरम (Tetanus Neonatorum)
5. उल्टी होना (Vomiting)
6. कब्ज (Constipation)
7. उदरीय विस्तारण (Abdominal Distension)

Answer- Minor Ailments found in Newborn.

Following are the major minor disorders found in newborn:

1. Ophthalmia Neonatorum
2. Umbilical Infection
3. Oral Thrush or Monoliasis
4. Tetanus Neonatorum
5. Vomiting
6. Constipation
7. Abdominal Distension

Q. नवजात में पाए जाने वाले मुख्य लघु विकारों को प्रबंधन सहित समझाइए।

Describe the main minor ailments in newborn with management.

उत्तर

नेत्र संक्रमण

(Ophthalmia Neonatorum)

प्रसव के समय माँ की योनि (vagina) से होने वाले संक्रमित स्रावों के कारण शिशु नेत्र संक्रमित हो जाते हैं। यह प्रायः जन्म के 2-3 दिन बाद प्रकट होता है।

### उपचार (Treatment)

1. सर्वप्रथम इसका शीघ्र निदान आवश्यक है।
2. निदान में देरी होने पर यह संक्रमण अधिक गहराई तक फैल सकता है।
3. प्रत्येक नेत्र की अलग-अलग gauze piece की सहायता से normal saline द्वारा साफ करना चाहिए।
4. चिकित्सक द्वारा prescribed eye drop को नियमित समय पर आँख में डालना चाहिए।
5. आँखों में होने वाले स्राव को समय-समय पर साफ करते रहना चाहिए।
6. शिशु को स्तनपान कराना जारी रखना चाहिए।
7. आँखों को हमेशा आंतरिक केन्थस से बाहरी केन्थस की ओर साफ करना चाहिए। प्रत्येक आँख को साफ करने के लिए अलग-अलग रूई के फोहे का उपयोग करना चाहिए।
8. आँखों को साफ करने के पश्चात् ही इसमें eye drop या ointment डालना चाहिए।

### नाभिनाल संक्रमण

#### (Umbilical Infection)

नाभिरज्जु की पर्याप्त देखभाल न करने के कारण यह संक्रमण हो जाता है।

### उपचार तथा प्रबंधन (Treatment and Management)



1. नाभिनाल की कटिंग करने के लिए विसंक्रमित उपकरणों का ही उपयोग करना चाहिए।
2. नाभिनाल के स्राव की नियमित रूप से स्प्रिट द्वारा सफाई करनी चाहिए।
3. नाभिनाल का नियमित रूप से अवलोकन करना चाहिए ताकि संक्रमण के लक्षणों का शुरुआती अवस्था में पता लगाकर आवश्यक उपचार करना चाहिए।
4. Stump को सूखा रखना चाहिए।
5. शिशु की देखभाल के दौरान सख्त विसंक्रमण तकनीक का उपयोग करना चाहिए।
6. Umbilical cord के संक्रमण के बचाव हेतु इसे नाभि से पर्याप्त दूरी पर काटना चाहिए।

## मुँह के छाले

### (Oral Thrush)

इसमें शिशु के मुँह की श्लेष्म कला पर सफेद रंग के चकत्ते बन जाते हैं।

ये मुख गुहा (oral cavity) तथा जीभ पर होने वाला फंगल संक्रमण है जोकि केन्डिडा एल्विकेन्स द्वारा फैलता है।

यह संक्रमण माता के संक्रमित स्तनों, अस्वच्छ बोतल तथा माता के संक्रमित हाथों द्वारा होता है।

### प्रबंधन (Management)

1. Gentian Violet का 0.5% जलीय विलयन प्रत्येक feed के बाद मुखगुहा में लगाना चाहिए।
2. स्तनपान कराने से पूर्व स्तन की स्वच्छता के बारे में सुनिश्चित हो लेना चाहिए।

3. संक्रमित शिशु के पालने में अन्य शिशु को नहीं सुलाना चाहिए।

### टिटनस नियोनैटम

#### (Tetanus Neonatorum)

यह नवजात में होने वाला टिटनस है इसमें शिशु की पेशियों में संकुचन होते हैं।  
रोकथाम (Prevention) -

1. शिशु को स्वच्छ स्थिति में रखना चाहिए।
2. गर्भावस्था के दौरान स्त्री का tetanus के प्रति टीकाकरण किया जाना चाहिए।
3. उपयोग में लिए जाने वाले उपकरण स्वच्छ एवं sterile होने चाहिए।
4. नाभिनाल की उचित देखभाल करनी चाहिए।
5. उपयोग में ली जाने वाली dressing sterile होनी चाहिए।
6. शिशु को चोट लगने पर घाव की उचित देखभाल की जानी चाहिए।

### वमन (Vomiting)

नवजात शिशुओं में वमन एक सामान्य समस्या है। प्रबंधन (Management)

1. स्तनपान करने वाले शिशुओं में अल्पमात्रा में regurgitation होना सामान्य है।
2. स्तनपान कराने के बाद माँ को शिशु को डकार दिलाने के बारे में बताना चाहिए।
3. शिशु को स्तनपान कराते समय सफाई का विशेष ध्यान रखना चाहिए।
4. वमन की अधिकता में शिशु को निर्जलीकरण से बचाना चाहिए व चिकित्सक से उचित सलाह लेनी चाहिए।

## कब्ज

### (Constipation)

मल त्याग के दौरान अत्यधिक जोर लगाने के बाद भी कम मात्रा में सख्त मल का पास होना या जोर लगाने के बाद भी मल त्याग नहीं होना कब्ज कहलाता है।

#### उपचार (Treatment)

1. शिशु को हल्के विरेचक (mild laxative) देना चाहिए।
2. शिशु का fluid intake बढ़ाना चाहिए।
3. यदि शिशु दीर्घ समय से कब्ज से परेशान है तो चिकित्सक की सलाह लेना चाहिए।

## उदरीय विस्तारण

### (Abdominal Distension)

यह एक गम्भीर समस्या हो सकती है जिसके उपचार हेतु शिशु को शिशु रोग विशेषज्ञ के पास ले जाना चाहिए।

#### उपचार (Treatment)

1. गैस को बाहर निकालने के लिए चिकित्सक की परामर्श द्वारा flatus tube डालनी चाहिए।
2. परीक्षण द्वारा उदरीय विस्तारण के कारण का पता कर उसका उचित मेडिकल तथा सर्जिकल उपचार कराना चाहिए।

Answer- eye infection

(Ophthalmia Neonatorum)

The baby's eyes become infected due to infected discharge from the mother's vagina at the time of delivery. It usually appears 2-3 days after birth.

Treatment

1. First of all, its prompt diagnosis is necessary.
2. If there is a delay in diagnosis, the infection can spread deeper.
3. Each eye should be cleaned with normal saline with the help of a separate gauze piece.
4. Eye drops prescribed by the doctor should be put in the eyes at regular time.
5. The discharge from the eyes should be cleaned from time to time.
6. Breastfeeding of the baby should be continued.
7. The eyes should always be cleaned from the inner canthus towards the outer canthus. Separate cotton swabs should be used to clean each eye.
8. Eye drops or ointment should be put in the eyes only after cleaning them.

## (Umbilical Infection)

This infection occurs due to not taking adequate care of the umbilical cord.

### Treatment and Management

1. Only sterilized instruments should be used for cutting the umbilical cord.
2. The discharge from the umbilical cord should be regularly cleaned with spirit.
3. The umbilical cord should be observed regularly so that the symptoms of infection can be detected in the early stages and necessary treatment can be done.
4. Stump should be kept dry.
5. Strict disinfection techniques should be used while caring for the baby.
6. To prevent infection of the umbilical cord, it should be cut at a sufficient distance from the navel.

## (Oral Thrush)

In this, white rashes form on the mucous membrane of the baby's mouth. This is a fungal infection of the oral cavity and tongue which is spread by *Candida albicans*. This infection occurs through mother's infected breasts, unclean bottles and mother's

infected hands.

## Management

1. 0.5% aqueous solution of Gentian Violet should be applied in the oral cavity after every feed.
2. Before breastfeeding, one should be sure about the cleanliness of the breast.
3. Another baby should not be made to sleep in the cradle of the infected baby.

## Tetanus Neonatorum

This is tetanus occurring in newborns, in which there are contractions in the muscles of the baby. Prevention -

1. The baby should be kept in clean conditions.
2. Women should be vaccinated against tetanus during pregnancy.
3. The equipment used should be clean and sterile.
4. Proper care of the umbilical cord should be taken.
5. The dressing used should be sterile.
6. If a child gets injured, proper care of the wound should be taken.

## Vomiting

Vomiting is a common problem in newborn babies. Management

1. A small amount of regurgitation is normal in breastfed babies.
2. After breastfeeding, the mother should be told to burp the baby.
3. Special care should be taken about cleanliness while breastfeeding the baby.
4. In case of excessive vomiting, the child should be protected from dehydration and proper advice should be taken from the doctor.

### Constipation

Passing small amount of hard stool even after applying excessive force during bowel movement or not passing stool even after applying force is called constipation.

#### Treatment

1. Mild laxative should be given to the child.
2. The fluid intake of the child should be increased.
3. If the child is suffering from constipation for a long time, then doctor's advice should be taken.

### abdominal distension

This can be a serious problem for which the child should be taken

to a pediatrician for treatment.

## Treatment

1. To expel the gas, flatus tube should be inserted after consulting the doctor.
2. The cause of abdominal distension should be found out through examination and proper medical and surgical treatment should be done.